5 No. 11 जैमिनी पद्धति
भोजनवृत्ति संहितादि

3(U)

रविवासरीय

नौकरी ने नारी को परतंत्र बनाया

की फरमाइश नहीं करेंगे। और क्यों नहीं करेंगे, उनका तो हक बनता है। हां, इस काम में पति महोदय का रसोई में आपकी मदद करना उनका फर्ज नहीं बनता है और न ही आप उन पर जोर डाल सकती हैं।

बच्चों के स्कूल में अभिभावक दिवस पर उनके स्कूल में जा कर अध्यापकों से बात करना एकमात्र मां के दायित्व क्षेत्र में आता है। पिता क्यों करें। उनके दफ़्तर में काम ज्यादा है। बच्चों का होमवर्क कराना, उनके लिए माडल तैयार करना, चार्ट तैयार करना, किताबों पर कवर चढ़ाना, यह सब स्त्रियों का क्षेत्र है, पुरुषों का यह काम करना, उनकी इज्जत के खिलाफ समझा जाएगा।

यह भी ध्यान में रखिए कि आपके पतिदेव को सिर्फ और सिर्फ हाथ से बुने स्वेटर ही पसंद हैं। रेडीमेड स्वेटर उन्हें अच्छे नहीं लगते हैं इसलिए ऊन ले लाइए और बस के सफर के दौरान समय का सदुपयोग स्वेटर बुनने से करिए। बस के सफर का आधा-पौन घंटा क्यों व्यर्थ किया जाए। दफ़्तर के लंच टाइम में आप लंच तो पांच दस मिनट में कर लेती होंगी तो बाकी के समय में थोड़ा बुनाई ही कर लिया कीजिए। इस पर मुद्दा यह कि स्वेटर साधारण नहीं वरन् अच्छे डिजाइन वाला होना चाहिए। मि. वर्मा की बीवी वाले डिजाइन से शानदार।

रविवार को छुट्टी होती है। पति महोदय दफ़्तर नहीं जाते, सुबह नौ बजे उठते हैं। बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं देर से उठते हैं लेकिन नहीं नहीं भूल मत करिए, यह छुट्टी आपके लिए नहीं है। आप को रोज की तरह सुबह ही उठना है, क्योंकि परिवार वालों का इतवार के दिन स्वादिष्ट नाश्ता करने का मन होता है। रोज की तरह सैंडविच नहीं पूरी छोले खाने का दिन तो रविवार ही है। ... निपटाने हैं। ... तो फिर आप ...

पाठको, आप ... नौकरी पेशा म... नहीं। आखिर ... क्यों धोखे में रखा ... के समान अधि... दफ़्तर में काम ... करती हो, जिस ... क्या वास्तव में, ... स्त्रियों को उनके ... से सोचा जाए तो ... से तो घर बैठने ... है। उसे घर बैठे ... मुहैया हो जाते ... की तरह नई स... डी.ए. की बा... आज भी ह...

... मायके चली जाऊंगी

... में लड़की का दाम्पत्य ...य नहीं होता, या लड़की ससुराल नहीं जाना चाहती ... कारण दहेज या लड़की ... ही नहीं होता इसके अन्य ... है कितने ही परिवारों में ...दंर कार्य में निपुण होने के ... उसे प्रतिष्ठा नहीं मिलती, ... को व्यवस्थित नहीं कर ... द्वारा उपेक्षित की जाती है। ...यों में ऋतु है जो अपने पति ...मायके में रह रही है। कारण ... कभी ऋतु की मां सुरेखा ...लियां थीं। जब राधा के घर ...खा ने कहा यदि मुझे लड़की ...अपने बच्चों को एक करके ...ी कर लेंगे। बात सही ... लड़की हुई और बात पक्की ...काएक राधा के पति एक ..., सुरेखा राधा से कटी-कटी ... राधा ने किसी तरह ... पढ़ाया। वह आई. ए.

में उसके उठने-बैठने व चलने में घर के लोग उसकी पढ़ाई का ताना दे-देकर, उसके प्रति खराब व्यवहार करते हैं। इससे लड़की ससुराल में सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाती और रोज रोज के तानों से घबड़ा कर मायके में रहना चाहती है।

कभी-कभी कुछ माता-पिता दामाद को घर जमाई बनाने की सोचकर अपने से कम पैसे वाले परिवार के लड़के से अपनी बेटी की शादी कर देते हैं लेकिन जब वह लड़का घर जमाई बनने से इंकार कर देता है और बहू को पति के साथ ससुराल में ही रहना पड़ता है तो ऐसी लड़की भी ससुराल में काफी लड़ती-झगड़ती है। पति से अलग रहने को कहती है लेकिन जब उसकी नहीं चलती तब वह मायके आकर फिर नहीं जाना चाहती।

इस प्रकार के किस्से रोज ही देखने सुनने को मिलते हैं फिर भी लोग इसमें सीखने की बजाए उसी गलती को बार बार दोहराते चले जाते हैं। इसमें लड़के व लड़की के माता-पिता का दोष है लेकिन अधिक दोष लड़की के माता पिता का ... लड़की के भौतिक सुख के ... रहता है जो ... नहीं रखता। लिए मानसिक सुख का ध्यान ... के लिए ...



ॐ स्वस्ति ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ इत्याद्यनुपपन्न [illegible]

[illegible]

[illegible] विभक्तिः [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] केवले लिङ्गे [illegible]

[illegible]

[illegible] विशेषः [illegible]

[illegible] विशेषः [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] विशेषे [illegible]

[illegible] विशेषः [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] 37

3 [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]